ज्योर्तिविज्ञान सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम

Certificate course in Jyotirvigyan

अर्ध–वार्षिकी

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
Hora Jyotish
होरा ज्योतिष

होरा ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को होरा फलित का ज्ञान प्राप्त कराना ताकि भ्रचक की बारह राशियों के गुण, लक्षण से परिचय कराना, ग्रहों के गुण आकृति के विषय में जानकारी प्राप्त कराना, ग्रहों की योग कारक स्थिति से परिचय कराना, व्यक्ति के जीवन में सूर्य और चन्द्रमा से बनने वाले राजयोग तथा पच्चंमहापुरूष राजयोग का ज्ञान तथा अरिष्ट के विषय में फलित का ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome

होरा ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- होरा शब्द के अर्थ का बोध, तथा राशियों का ज्ञान।
- ग्रहों के गुण लक्षणादि के आधार पर जन्मकुण्डली का विश्लेषण करना।
- ग्रहों की योग कारक स्थितियों से परिचय कराना।
- अनफा, सुनफा दुरूधरा, केमद्रुम और रूचक–भ्रद्रक, हंस, मालव्य एवं शशि महापुरूष के लक्षण एवं फल का ज्ञान।
- जन्मकुण्डली के द्वारा जातक के जीवन में अरिष्ट का विश्लेषण करना।
- होरा ज्योतिष परामर्श से आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I सारावली–होराशब्दार्थाध्याय तथा राशिभेदाध्याय

Unit-II सारावली–ग्रहगुणाध्याय

Unit-III सारावली–योगकारकाध्याय तथा कारकाध्याय

Unit-IV सारावली–चन्द्रयोगाध्याय, सूर्ययोगाध्याय तथा पंच्चमहापुरूषयोगाध्याय

Unit-V सारावली–अरिष्टाध्याय

[D] Readings

Books:

1. सारावली कल्याण वर्मा – हिन्दी व्याख्याकार– डॉ0 सुरेश चन्द्र मिश्र
2. सारावली कल्याण वर्मा – हिनदी व्याख्याकार –डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी
3. Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri
4. बृहज्जातक–भट्टोत्पलटीका सहित वराहमिहिर–टीकाकरण – श्री केदारदत्त जोशी
5. बृहज्जातक– हिन्दी टीकाकरण– पं. सीताराम झा
6. Brihat Jatakam-Varahmihir English Translation by Prof. P.S. Shastri
7. बृहज्जातक– हिन्दी टीकाकरण–सुरेश चन्द्र मिश्र

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
: Jataka Shastra
(जातक–शास्त्र)

जातकशास्त्र के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को बृहज्जातक के अनुसार किसी जातक की आयु का निर्धारण करना, आजीविका के विषय में ज्ञान प्राप्त करना, किसी जातक की कुण्डली में राजयोग का ज्ञान प्राप्त कराना हैं।

[B] Outcome

जातक–शस्त्र पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- विभिन्न योनियों मे आयु का निर्धारण, आजीविका के निर्धारण का ज्ञान।
- कुण्डली में स्थित राजयोग और नाभस योग का ज्ञान।
- राशियों के स्वभाव का निरूपण एवं भावों का ज्ञान।

जातक–शास्त्र के अध्ययन से परामर्श छ्वारा स्वरोजगार को गति दी जा सकती है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I बृहज्जातक–आयुर्दायाध्याय

Unit-II बृहज्जातक–कर्मजीवाध्याय

Unit-III बृहज्जातक–राजयोगा तथा नाभसयोगाध्याय

Unit-IV बृहज्जातक–भावाध्याय

Unit-V लघुजातक–राशिशीलनिरूपण

[D] Readings

Books:

1- बृहज्जातक–भट्टोत्पलटीका सहित–वराहमिहिर–टीकाकार–श्री केदारदत्त जोशी

2- बृहज्जातक –हिन्दी पं. सीतारात झा

3- **Brihat Jatakam-Varahmihir English Translation by Prof. P.S. Shastri**

4- लघुजातक–पं. लखनलाल झा

5- सारावाली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार–डा0 सुरेशचन्द्र मिश्र

6- **Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri**

7- बृहज्जातक –हिन्दी टीकाकार–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
: Panchanga Tatha Janmpatrika Nirmana Paddhati
(पंचांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पद्धति)

पचांग के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को संवतसर, अयन, गोल, ऋतु, संकान्ति, तिथि, वार, नक्षत्र, शेग तथा करण परिचय कराना है। जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति के अध्यापन का उद्देश्य अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, विंशोत्तरी दशा साधन का ज्ञान कराना।

[B] Outcome

पचांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पाड्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा ।

- अयन, गोल, ऋतु, मास, पक्ष, तिथ, वार, नक्षत्र आदि का ज्ञान।
- सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान, रात्रिमान और मिश्रमान का ज्ञान ।
- अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, भयात–भभोग आदि का ज्ञान ।
- जन्मपत्रिका निर्माण विधि का ज्ञानकर प्रतिष्ठापूर्वक धनागम कर सकते है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I पचांग में सम्वतसर, अयन, गोल, ऋतु, संकान्ति, चन्द्रमास तथा पक्ष परिचय

Unit-II तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण परिचय

Unit-III जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (मानक समय से सथानीय समय का ज्ञान, सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान रात्रिमान तथा मिश्रमान)

Unit-IV जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (इष्टकाल, अयनांश, सायनसूर्य, लग्नसाधन तथा दशम लग्नसाधन)

Unit-V जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (भावसाधन, ग्रहस्पष्टीकरण, भयात, भभोग तथा विंशोत्तरी दशा साधन)

[D] Readings

Books:

1. मानसागरी – टकाकार– प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय
2. भारतीय कुण्डली विमर्श डॉ0 गिरिजा शंकर शारूत्री
3. भारतीय कुण्डली विज्ञान–हिम्मत लाल मीठालाल ओझा
4. ज्योतिष सर्वस्व–डॉ0 सुरेश चन्द्र मिश्र

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
Muhurta Jyotish
(मुहूर्त्त ज्योतिष)

मुहुर्त्त ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को मुहुर्त्त गणपति के अनुसार सम्वत्सर, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के अनुरूप मुहुर्त्त का निर्धारण तथा नामकरण मुहुतर्त, चूड़ाकर्म मुहूर्त्त, उपनयन मुहुर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्त का ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome
मुहुर्त्त ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्याार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- सम्वत्सर, तिथि, वार, नक्षत्र, करण तथा योग का ज्ञान।
- नामकरण,चूड़ाकर्म, उपनयन एवं विवाह मुहुर्त्त का ज्ञान।
- पच्चशलाका वेध का ाान।
- समाज में प्रचलित षोडश संस्कार, अन्श शुभाशुभ इत्यादि कार्यों के मुहुर्त्त बताकर यश तथा अर्थ की प्राप्ति की जा सकती है।

[C] Contents: Unit wise Division
Unit-I मुहुर्त्त गणपति संवत्सरादि(प्रकरण, तिथि प्रकरण तथा वार प्रकरण)

Unit-II मुहुर्त्त गणपति संवत्सरादि (नक्षत्र प्रकरण, योग प्रकरण तथा करण प्रकरण)

Unit-III मुहुर्त्त चिन्तामणि (नामकरण मुहूर्त्त, चूडाकरण मुहूर्त्त तथा उपनयन मुहूर्त्त)

Unit-II मुहुर्त्त चिन्तामणि (विवाह प्रकरण प्रारम्भ से पच्चशलाकावेध से विवाह प्रकरणोपसंहार)

[D] Readings
Books:

1. मुहूर्त्त गणपति–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 मुरलीधर चतुर्वेदी
2. मुहुर्त्त चिन्तामणि–श्री रामाचार्य (पीयूषधारा टीका सहित), हिन्दी व्याख्याकार–पं. केदारदत्त जोशी
3. मुहुर्त्त चिन्तामणि–श्रीरामाचार्यकृत, हिन्दी व्याख्याकार–डॉ0 रामचन्द्र पाण्डेय
4. मुहुर्त्त चिन्तामणि श्री रामाचार्य (पीयुषधारा टीका सहित), हिन्दी व्याख्याकार–पं. केदारदत्त जोषी
5. मुहुर्त्त मार्तण्ड–श्री नारायण दैवज्ञ, हिन्दी टीकाकार–पं. केदारदत्त जोशी
6. शीघ्रबोध–काशीनाथ–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 बृजेश कुमार शुक्ल
7. ज्योतिर्विदाभरण–कालीदास–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 रामचन्द्र पाण्डेय

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
Computer tatha Jyotish
(कम्प्यूटर तथा ज्योतिष)

[A] Program Outcome

कम्प्यूटर आधुनिक समाज में साक्षरता और शिक्षा का प्रमुख आधार बन चुका है। ज्योतिष में भी कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर अपनी भूमिका निभा रहा है। कम्प्यूटर तथा ज्योतिष पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से सुयोग बनाना है।

[B] Program Specific Outcome

कम्प्यूटर तथा ज्योतिष पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा साफ्टवेयर का ज्ञान।
- साफ्टवेयर से कुण्डली गुण मिलान का ज्ञान।
- साफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I कम्प्यूटर का सामान्य परिचय
Unit-II ज्योतिष के विभिन्न साफ्टवेयरों का वर्णन
Unit-III साफ्टवेयर की शुद्धता परीक्षण का ज्ञान

Unit-IV साफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि
Unit-V साफ्टवेयर से गुण मेलापक

[D] Readings
Books:

1 कम्प्यूटर सामान्य ज्ञान–जेबीसी प्रेस संपादक मण्डल
2- Astro office 2018
3- Parashar Light 7.01
4- Future point
5- Astrosage mobile software
1- Hindu Calendar offline software

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
Samanya Karmakand Paddhati
(सामान्य कर्मकाण्ड पद्धति)

[A] Objective

मानव जीवन का उद्देश्य पुरूषार्थ चतुष्टयः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हैं। धर्म पुरूषार्थ का सर्वाधिक पद्वा कर्मकाण्ड है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत नित्य एवं नैमित्तक पूजा कर्म अनुष्ठान, विवाह आदि संस्कार एवं गृहारम्भ और गृह प्रवेश की पूजा विधि का विद्यार्थियों का ज्ञान प्राप्त करना, इस पाठ्यकम का उद्देश्य हैं।

[B] Outcome

सामान्य कर्मकाण्ड पद्धति पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- नित्य एवं नैमित्तक पूजा–पाठ के मन्त्र एवं अनुष्ठान की विधि का ज्ञान।
- ग्रह–शान्ति एवं पूजा होमवर्क पद्धति का ज्ञान।
- यज्ञोपवीत एवं गृह –प्रवेश आदि की विधि का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I	नित्यनैमित्तककर्म पद्धति
Unit-II	पूजा होम–कर्म पद्धति
Unit-III	अनुष्ठान शान्ति–कर्म पद्धति
Unit-IV	संस्कार कर्म पद्धति
Unit-V	गृहारम्भ और प्रवेश कर्म पद्धति

[D] Readings

Books:

1. कर्म कौमदी–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
2. कर्मठगुरू–मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
3. कर्मकाण्ड प्रदीप–जर्नादन शास्त्री पाण्डेय
4. पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक – उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (उ0प्र0)
5. नित्य कर्म पूजा प्रकाश – गीता प्रेस, गोरखरपुर

SEMESTER : I
(Certificate course in Jyotirvigyan)
Gochar Tatha Ashtakvarga

[A] Program Outcome

गोचर तथा अष्टकवर्ग के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को जन्मकुण्डली फलित ज्ञान के लिये ग्रह–गोचर सिद्धान्त का ज्ञान कराना, भिन्नाष्टक तथा समुदाय अष्टकवर्ग से आयु एवं अरिष्ट का ज्ञान कराना। अष्टकवर्ग से भाग्य, धन, वाहन एवं राजयोग आदि का ज्ञान कराना।

[B] Program Specific Outcome

गोचर तथा अष्टकवर्ग पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा ।

- ग्रह–गोचर सिद्धान्त फल का ज्ञान।
- भिन्नाष्टक, त्रिकोणशोधन तथा एकाधिपत्य शोधन का ज्ञान।
- आयु एवं अरिष्ट का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I	ग्रह–गोचर सिद्धान्त तथा फल
Unit-II	अष्टकवर्ग का परिचय
Unit-III	भिन्नाष्टक वर्ग तथा समुदाय अष्टकवर्ग
Unit-IV	अष्टकवर्गफल, त्रिकोणशोधन तथा एकाधिपत्य शोधन
Unit-IV	आयुर्दाय एवं अरिष्ट अष्टकवर्ग

[D] Readings

Books:

1- फलदीपिका–मन्त्रेश्वर, हिन्दी टीकाकार–पं. गोपेश कुमार ओझा
2- **Phaldipika (Mantreshwara) with English Translation, Notes Commentory by Dr. G.S. Kapoor**
3- अष्टकवर्ग महानिबन्ध–आचार्य मुकुन्छ दैवज्ञ 'पर्वतीय'
4- अष्टकवर्ग (सिद्धान्त का प्रयोग) –के0 एन0 राव
5- अष्टकवर्ग भग्य बिन्दु–विनय आदित्य
6- अष्टकवर्ग फलित की आधुनिकता विधियाँ–एम0एस0 मेहता
7- सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार7 डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
8- सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार7 डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी
9- **Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri**
10-लघु जातक–पं. लखनलाल झा